410
(P)
(80)
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1379
10/71

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 410

891.431
G1516

गांधी संग्राम

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 410
Date 9.12.71
GOVT. OF INDIA

दूसरा भाग ।

पहिले सुमरु ईश्वर को दूजे भारत को सिर नाय ।
देवी सुमरु बँगाले की जो असने में करे सहाय ॥ १ ॥
महावीर का सुमरन करके गुरु अपने को सीस नवाय ।
गान्धी जी की आल्हा का दूजा हिस्सा लिखूं बनाय ॥ २ ॥
लगा महीना जौलाई का सुनलो जनता कान लगाय ।
आर्डिनेसन जारी कर दिये अब कुछ रहा ठिकाना नाय ॥ ३ ॥
गिरफ्तारी जोरों से हो रही सौ दो सौ की गिनती नाय ।
कानूनों को ठुकरा करके कुर्की जप्तीर हे कराय ॥ ४ ॥
जगह जगह निहत्थों के ऊपर लाठी गोली दई चलाय ।
ऐसा जुल्म किया भारत में इनको जेबा देता नाय ॥ ५ ॥
इन बातों को यहाँ पर छोड़ो अब आगे का सुनो बयान ।
जुड़ी कौन्सिल शिमले अन्दर वहाँ का तुम अब धरलो ध्यान ॥६॥
वायसराय बैठे थे वहाँ पर बम्बई वाला लाट बुलाय
जो हजूर बठे थ कई हाले हाल रहे बतलाय ॥ ७ ॥

गान्धी ने बहका दिया भारत रौब कोई अब माने नाय ।
सलायम तक ना लेय हमारी पीछे ताली दे बजाय ॥ ८ ॥
जिस रोज काम छोड़दें सारे स्वराज इन्हें जभी मिल जाय ।
टट्टू से रह जाय पकड़ते नहीं हमारी पार बसाय ॥ ९ ॥
पुलिस वालों ने मार मार कर काला मुखड़ा दिया करवाय ।
हम जाने थे ये दावेंगे उलटे इन्हों ने दिया भड़काय ॥ १० ॥
सख्ती करके देखा हमने कई जगह पर लिया अजमाय ।
क्या कर सकते हैं हम जो छोड़ नौकरी हिन्दुस्तानी जाय ॥११॥
इतनी बात सुनी लाट ने मन में गया तरारा खाय ।
जब तक मेरा दम में दम है तुमको कौन पड़ी परवाय ॥ १२ ॥
यह जी हजूरी रहे सलामत गू तक तुम्हारा लें उठाय ।
रायबहादुर यों उठ बोले भँगी चमार दो बहकाय ॥ १३ ॥
अपनी बिरादरी नहीं मिलने दूँगा प्रेसीडेन्ट दो मुझे बनाय ।
जरा सा टुकड़ा डाल कर इनमें लो भाई पर भाई पिटवाय ॥१४॥
जो जालिम हिन्दुस्तानी उनकी नौकरी दो बढ़ाय ।
ऐसे बोले वायसरायजी झगड़ा दूना ही बढ़ जाय ॥ १५ ॥
खैर नहीं है अब राज की औरत रन में पहुँची आय ।
जिस काम को किया इन्हों ने फौरन दिया बन्द कराय ॥ १६ ॥
जो नहीं कही इन्हों की माने घर पर साया दे कराय ।
किसी तरह से इनको भाई जल्दी दो सुलह कराय ॥ १७ ॥

जैकर और सप्रू बुलवा कर सारी बात कही सुनाय ।
अपनी तरफ से सुलह करादो नहीं बात हमारी कानों जाय ॥१८
रघुकुल रीति सदा से यहाँ पर प्राण जाय पर बचन न जाय ।
नल हरिश्चन्द मोरधज जैसे कई किस्सा कहे समझाय ॥ १९ ॥
गान्धी नहीं जवाहर माने चाहे कालबली आ जाय ।
पर कहन से मैं जाता हूँ हुक्म मिलने का दो करवाय ॥ २० ॥
फौरन सवार हो गये ये दोनों जेल यरवदा पहुँचे जाय ।
गान्धी जी की देख शकल को मन में गये सनाका खाय ॥२१॥
हाथ जोड़ कर दे परिकम्मा चरणों में दिया शीश नवाय ।
कहा हाल जवानी सारा सारी बातें दई समझाय ॥ २२ ॥
एक दम हँसे देख कर पुरजा जैकर मन में गये शरमाय ।
पाँडवों ने पाँच गाँव माँगे थे नहीं कौरव माने नमक हराम ॥२३॥
बहुतेरा समझाया कृष्ण ने महाभारत में मरे तमाम ।
ग्यारह शर्तें मैंने माँगी देने से कर दिया इन्कार ॥ २४ ॥
बार बार मैंने समझाया करते रहे आप इसरार ।
ग्यारह में से इक न दीनी धक्का देकर दिया भगाय ॥ २५ ॥
हो निराश हम आये वहाँ से वीर जवाहर गये घबराय ।
मांखन चोर को महाभारत में फौजी हुक्म था कोई नाय ॥२६॥
इसी तरह से इस नमक चोर को इन बातों से मतलब नाय ।
यह जाने सब शाह जवाहर मैं तो उनका खादिम यार ॥ २७ ॥
मैं तो सुलह करूँ ना हरगिज अब नहीं है मुझको अख्तियार ।

बात जबानी सब कह देना एक लिख कर पुर्जा दूँ गहाय ॥२८॥
सुस्त होकर जैकर चल दिये अपनी लाये पूँछ दबाय।
बहुत से लीडरों से रस्ते में जेल में जाकर करी सलाह ॥ २९ ॥
जगह २ पर वह फटकारे इलाहाबाद में पहुँचे आय।
नैनी जेल में चले उतर कर मोटर लीनी एक मँगाय ॥ ३० ॥
ग्यारह बजे का वक्त सुहावना बादल ऊपर रहा मडलाय।
मन्ध सुगन्ध पवन चले थी कोयल रही थी कूक लगाय ॥ ३१ ॥
नन्ही २ बूंद पड़े थी दादुर रहे थे शोर मचाय।
सावन का महीना मनभावन जिसकी शोभा कही न जाय ॥३२॥
पण्डितजी थे जेल के अन्दर बैकुण्ठ अन्दर ज्यों धर्मराय।
सफेद बाल थे वृद्ध अवस्था लम्बी धोती ली छिटकाय ॥३३॥
एक कमीज थी सिर्फ बदन पर जिसकी शोभा कही न जाय।
एक मामूली कमरे में जैकरजी को लिया बुलाय ॥३४॥
बुला लिये धर्मराय पण्डिजी अर्जन बोर जवाहरलाल।
शेर बवर आये पिंजरे से तेजी से थी आँखें लाल ॥३५॥
चप्पल पहरे थे पैरों में और सिर के बिखर रहे थे बाल।
देख वीरता उनके चहरे की सौ सौ कोस भागता काल ॥३६॥
जैकरजी की देख शक्ल को धर्मराय जी गये मुसकाय।
आप जैसे आगये यहाँ पर जल्दी स्वराज हमें मिलजाय ॥३६॥
जब शरमाये जैकर मन में झट छाती से लिया लिपटाय।
दे दिया पर्चा गान्धीजी का और सब बातें कही सुनाय ॥३८॥

हम कहने उनके चलते हैं हम को नहीं कुछ भी अखत्यार।
वायसराय को बाहर आकर सभी हाल का भेजा तार ॥३९॥
कहा ऐसे काम बने नहीं साहिब एक जगह इनको दो करवाय।
वायसराय ने मंजूर कर लिया खर्चा दिया खूब अथाय ॥४०॥
डाक्टरसाहब भेजे पहिले फिर सरोजनी पर पहुँचे जाय।
पिंजरे अन्दर गरजी शेरनी डर कर पास कोई ना जाय ॥४१॥
जेल वाले सब काँपन लग गये जिस दम निकली डंडा खाय।
सब्ज रंग की थी एक साड़ी और चहुँ ओर सब्जाही लहराय ॥४२॥
खास गाड़ी मंगवाकर उनको जेलयर वदा दी पहुँचाय।
खास स्पेशल आई शाही खर्च जिस पर पाँच हज़ार ॥४३॥
मोतीलाल बैठाये उसमें संग में थे महमूद जवाहर।
पन्द्रह हज़ार खर्च के आये फल उठ गये थे बेशुम्मार ॥४४॥
जेलयर वदा जुड़ी कचहरी बातें करन लगे सरदार।
आखिर सबने यह ठहराया हम कैदी हैं यहाँ सरकार ॥४५॥
यहाँ की बातें वो ही जाने हमको नहीं है कोई अखत्यार।
महात्मा गान्धी ऐसे बोले हम समझौते से डरते यार ॥४६॥
अपनी करनी में नहीं चूकें गवर्नमेण्टि जालिम सरकार।
हिन्दू मुसलिम रण में उठ गये जिनमें भर गया जोश अपार ॥४७॥
बच्चा औरत घर से निकले मरने को सब हैं तैयार।
जो कुछ होगा देखा जाय भली करेंगे वो करतार ॥४८॥
कई जगह जल्दी हुआ समझौता खूब निकाले उनके वल।

इस सरकार को हम जानते हैं जैसे जैसे करती छल ॥४९॥
निराश होकर जैकर चल दिया वायसराय को दे दिया तार ।
बाहर खड़े थे अखबार वाले पुलिस वालो ने दी ललकार ॥५०॥
एक बैठ गये गम्बई रेल में एक ने सिन्धी की पकड़ी राह ।
चन्द रोज वहाँ रहकर के वायसराय को दे समझाय ॥५१॥
सुलह अब नहीं होवे हरगिज बच्चा बच्चा चाहें कटजाय ।
यह तो बात सुलह की होती देहली में वर्किंगकमेटी पकड़ी जाय ॥
जैसे पासे शुकनी डाले ऐसे पासे अर्विन रहा घुमाय ।
इधर तो यह जाल रचा है उधर गान्धी को रहा फुसलाय ॥५३॥
दुर्योधन था जालिम द्वापर एक गाँव तक दीया नाय ।
आखिर कृष्ण ने कर महाभारत उसका दीना नाम मिटाय ॥५४॥
अब कलयुग में गान्धी जी ने लिया कृष्ण का आ औतार ।
करी लड़ाई असहयोग की नहीं कर में पकड़े हथियार ॥५५॥
पटेलविजय हैं धर्म युद्धिष्ठर सच्चाई के जो औतार ।
कभी झूट वो नहीं बोलें चाहे बाजी जावे हार ॥५६॥
अर्जुन औतार वीर जवाहर दुश्मन पर चढ़ जाये किलकार ।
इस पर हाथ कृष्ण का भारी सब कौरवों को दीना मार ॥५७॥
नेकी राम औतार सहदेव हैं बड़े २ पण्डित चक्कर खाय ।
जब हंकारे रन के अन्दर गाँडू भागे पीठ दिखाय ॥५८॥
नकुल देहली शङ्करलाल हैं जो सख्ती से डरते नाय ।
दुश्मन ने उन्हें पकड़ २ कर कई दफे लिया अजमाय ॥५९॥

भीमसेन हैं सरदार पटेल जी जिनकी गरज दूर तक जाय।
बम्बई गुजराती और मदरासी जगह २ पर दिया जगाय ॥६०॥
द्वापर में थी एक द्रोपदी अब घर २ में हैं औतार।
कमला नेहरू सत्यवतीजी पार्वती उर्मिला राजकुमार ॥६१॥
राजपाल थे वीर अभिमन्यू जिसने दीनी जान गमाय।
दुश्मन धोका करके ले गये मिलकर के दिया मरवाय ॥६२॥
कुन्ती है कस्तूरी बाई वृद्ध अवस्था सरल स्वभाव।
दया रक्खे सबके ऊपर कभी नहीं लाती है ताव ॥६३॥
भीष्मपितामय हैं मालवीय जी प्रतज्ञा का रक्खे ख्याल।
दोनों तरफ के शुभचिन्तक हैं राजभक्त और देश प्रतिपाल ॥६४॥
द्रुपद है डाक्टर अन्सारी अनी जुड़ी पर पहुंचे आय।
जमनादास वेरार राव हैं हर असने में करें सहाय ॥६५॥
मगध देश के बुढ़े तैयब जो अर्जुन से कमती नाय।
डाक्टर महमूद और किचलू जी जोधा एक से एक सिवाय ॥६६॥
बाकी जो रह गये पाँडवों के तीसरे हिस्से देखो जाय।
जो राजा चढ़े साथ में हुवे औतार कांग्रेस आय ॥६७॥
गाँधारी अनीबसन्ट हैं जो अंगरेजों को रही समझाय।
धृतराष्ट्र भारत मन्त्री हैं भला बुरा कुछ सोचे नाय ॥६८॥
जिसने कह दिया वोही माने आगा पीछा सोचा नाय।
उठ आवे कौरव दुनियाँ से घर में रहना झाँज बजाय ॥६९॥
दुर्योधन वायसराय साहब हैं जोश हकूमत रहे जो छाय।

जिस किसी ने कान भर दिये उस पर दीनो अमल जमाय ॥७०॥
कौन्सिल एकसौ एक भाई है हानि लाभ की नहीं परवाय।
हलवा माड़े से मतलब है चाहे राज रहो चाय जाय ॥७१॥
गंग मन्त्री होममैम्बर हैं होती देते सुलह मिटाय।
कर्ण औतार पाल भाई हैं हुवे कांग्रेस के दुश्मन जाय ॥७२॥
अली ब्रादर औतार शुगनी जो गान्धी से चूके नाय।
सुलह नहीं ये होने देंगे जो आपस में रहे लड़वाय ॥७३॥
दूशासन है बम्बई वाला जो ज्वानी में रहा सन्नाय।
हजारों द्रौपदी पकड़ २ कर जेलखाने में दईं पहुंचाय ॥७४॥
द्रोणाचार्य हैं जैकरजी कृपाचार्य्य सप्रूराय।
मनतो करता कांग्रेस अन्दर उनके टुकड़े रहे जो खाय ॥७५॥
अस्वस्थामा साइमन साहिब कलंक का टीका लिया लगाय।
बुरा भला सब कहती प्रजा हाय हाय कर रहे डकराय ॥७६॥
जयद्रथ हैं अब्दुलवाहिद जरा दया जिस के दिल में नाय।
बच्चे औरत निहत्तों को जी चाहे जहाँ दे पिटवाय ॥७७॥
बीड़ा खाया कचहरी अन्दर चीफ़ कमिश्नर कहा समझाय।
पन्द्रह दिन की मोहलत देदो कांग्रेस हिन्दसे दूं मिटवाय ॥७८॥
की चक जानो पेशावर वाला घर घर औरत दी पिटवाय।
सुसरमा हैं जी हजूरी लड़वा दें और लड़ते नाय ॥७९॥
बब्रुवाहन है अमरीका हारे जीते झट मिल जाय।
शल्य जानो राव पटियाला मय कुनबा के पहुंचा आय ॥८०॥

जरासिन्ध है जालिम डायर जो रहे विलायत मांउ बड़ाय ।
जो राजा जालिम हैं इस में तीसरा हिस्सा लो मंगवाय ॥८१॥
पेशावर में जंगी मोरचा अफरीदियों का पहुँचा आय ।
बोले सेवक बहुत से रूसी उन्होंने यहां पर लिये बुलाय ॥८२॥
जालिम पर जालिम है भाई देखो आगे निगाह उठाय ।
चन्दरोज में ये भगजावें लड़वेगी हिंद की आह ॥८३॥
किन्हीं दिनों में यह भारत जो दुनिया में था मालामाल ।
देखकर इसकी पैदावारी इनके दिल में हुआ मलाल ॥८४॥
यह आये थे सौदागिरी को शाह की लड़की हुई बीमार ।
करा माफ़ महसूल इलाज़ कर अपनी कम्पनी दी बिठलाय ॥८५॥
फिर औरंगजेब ने जोश मज़हब में झगड़े यहां पर दिये फैलाय ।
लगगई मिसल यहां पर इनकी रफ्ते २ लिया दबाय ॥८६॥
लड़ा लड़ा के हिंदु मुसलमा अपनी ताक़त लई बढ़ाय ।
झगड़ा होगया भारत अन्दर कोई राजा यहाँ छोड़ा नाय ॥८७॥
एक राजा पर एक चढ़ा कर एक को दीनी मदद पहुँचाय ।
कुछ हिस्सा लेलिया इधर से आधा उससे लिया बटाय ॥८८॥
जर और ताक़त खर्च हुईना मुफ्त में लिया काम बनाय ।
झाँसी भरतपुर किले बहुत से रिश्वत देकर दिये तुड़वाय ॥८९॥
लूटे राजे सब भारत के इंगलैण्ड दिया माल पहुँचाय ।
याकूत हीरे सभी निकाले लालकिले में देखो जाय ॥९०॥
दस्तकारी थी यहां पर भारी देखकर गये सनाका खाय ।

मलमल ऊनी और रेशमी ज़रीन छींट दई पहुँचाय ॥९१॥
लेडी आशिक हुई पहन कर सुधबुध सारी दई बिसराय ।
उलटा रुपया जब आने लग गया ऐसा सोचा मन के माँह ॥९२॥
देदे लालच और लोभ जी कारीगर सब लिये बुलाय ।
जागीर का देदिया भरोसा इंगलैण्ड उनको दिया पहुँचाय ॥९३॥
दस्तकारी सब सीखी उनसे दी औज़ारों में आग लगाय ।
हाथ काटकर अन्धा करदिया बहुतसे फाँसी दिये लटकाय ॥९४॥
इंगलैण्ड अन्दर करी तरक्की यहाँ से दीया नाम मिटाय ।
और कानें सब बन्द कराकर कोई जरिया छोड़ा नाय ॥९५॥
जो चीजें यहाँ पर बनती थी उन पर दिया महसूल बढ़ाय ।
राजा सब बस में कर लिये ऊपर दिये एजेन्ट बिठाय ॥ ९६ ॥
ना कोई फौज करै है भर्ती ना कोई हथियार बनाय ।
बारूद गोली जिस को चाहिये करके दस्तख़त बोले जाय ॥ ९७॥
गर किसी ने सर उठाया पागलखाने दिया पहुँचाय ।
जागीर उसकी ज़ब्त कराली उल्टा दिया इल्जाम लगाय ॥ ९८ ॥
बहुतसों को दे दीनी लेडी और उन पर यह अहद कराय ।
जो बच्चा होवेगा इस से वोही मालिक राज कहाय ॥ ९९ ॥
सी आई डी को डाल बीच में हिन्दू मुसलिम दिये लड़ाय ।
जगह जगह पर फूट करा कर अपना मतलब लिया बनाय ॥१००॥
जहाँ पर हिन्दू देखे उभरते मुसलमानों को दिया लड़ाय ।
मुसलमानों को देखा बढ़ता हिन्दुओं को दिया भिड़ाय ॥ १०१ ॥

मार पिटाई खूब करा कर खुद ने गोली दई चलाय ।
दोनों तरफ से पकड़ा जाकर खुद लाये वह कैद कराय ॥ १०२ ॥
जगह २ पर करा तलाशी काले पानी दिये पहुँचाय ।
बहुतसों की जागीर जप्त करके फिर फाँसी पर दिया चढ़ाय ॥१०३
राज कम्पनी का था यहाँ पर मल्का से रहे मदद मँगाय ।
इनकी जड़ मज़बूत होने को सन सत्तावन पहुँचा आय ॥ १०४ ॥
मेरठ की छावनी के अन्दर फौजों ने दिया फिसाद मचाय ।
ग़दर हो गया भारत अन्दर इन से फिर गई झट निगाह ॥१०५॥
अन्न जल था यहाँ पर कुछ बाकी सिक्खों ने मदद करी थी आय
इसका ऐवज़ दिया इस तरह से जालिम डायर ने गोली दई चलाय
भारतवासी सच्चे होते इन गोरों को जब भी लिया छपाय ।
गर इङ्गलैण्ड सा होता यहाँ पर देते झगड़ा अभी मिटाय ॥१०७॥
कुछ ब्लौक हौल बन्द कर दिये चन्दों ने दो जान गमाय ।
उसका खून हुआ नहीं ठण्डा लाखों फाँसी दिये चढ़ाय ॥१ ८॥
जब कम्पनी पै राज चला नहीं मलका रानी दिया गहाय ।
हिन्दोस्तानी आये बातों में दोबारा दिया राज कराय ॥ १०९ ॥
जो अँगरेज़ छिपा रक्खे थे उनकी ख़ातिर करी बनाय ।
राज़ बैठते ही दे दिया इनको इसका इनाम मिला यह आय ॥११०
शहर २ में फाँसी गाढ़ी जालिम अँगरेज़ दिये बैठाय ।
रोज हजारों को फाँसी देकर फिर डबल रोटी और पीवे चाय ॥१११

नादिरशाह ने दस घण्टे तक दिल्ली में किया कत्लेआम ।
इन्होंने दो माह तक हिन्दी में यह जारी रक्खा था काम ॥११२॥
बहुत से आदमी कील ठोक कर दरख्तों पर दिये लटकाय ।
खाने को नहीं इन्होंने दीना मार मार कर दिया सुखाय ॥११३॥
ऐसा रौब जमा भारत पर सभी दिये वीर मिटाय ।
जरा किसी ने किया इशारा अदमलोक को दिया पहुँचाय ॥११४
जो बच गया था इस अल्ही से उनको झगड़ा दिया लगवाय ।
औरत बच्चे सब तरसाये काले पानी दिये पहुँचाय ॥ ११५ ॥
मल्का ने यह अहद किया था हम दोनों को समझें एक ।
भारत के सदां रहें भले में करें तिज़ारत यहाँ पर नेक ॥११६॥
थोड़े दिन हम राज करें हैं तुम को लायक दें बनाय ।
हम तो यहाँ से चले जायेंगे तुमको देंगे राज गहाय ॥ ११७ ॥
मल्का ने तो प्रण निभाया जो मुख से किया फरमान ।
मल्का चली गई स्वर्ग लोक को इनकी फिर गई बस जबान ॥११८
ऐसा पीसा भारत देश को जिसकी मार सही ना जाय ।
नहीं उभरने दिया हिन्द को बड़े २ क़ानून दिये बनाय ॥ ११९ ॥
जी हजूर कर दिये कुत्ते ख़िताब की पूंछे दई लगाय ।
मर्दों से नामर्द बनाये डाढ़ी मूँछे दी मुड़वाय ॥ १२० ॥
तरह २ के सामान मँगा कर एय्याशी में दिये फसाय ।
शराब पिला कर बेहोश कर दिया जेबसे नामा लिया मँगाय ॥१२१

बिठला करके कुर्सी ऊपर इनको भुट्ट दिया बनाय ।
कभी कोई प्रस्ताव पार कर कभी किसी को दिया गिराय ॥१२२

मेम्बरी के टुकड़े डाल कर बीच में उन पर कुत्ते दिये लड़ाय
भाई का भाई किया दुश्मन अपना लिया कान बनाय ॥ १२३ ॥

जिसने कोई ऐतराज उठाया बम्ब का बहाना दिया लगाय ।
काले पानी वह भिजवाया राजद्रोही उसे ठहराय ॥ १२४ ॥

देहाती जो थे गुन्डे सफ़ेदपोश किये नम्बरदार ।
पोता वसूल करें भाई से डन्डों से दिलवाकर मार ॥ १२५ ॥

शिमला में आय मौज उड़ाते बेईमानी दी सिखलाय ।
अदालत पर की अदालत जारी दिया भाई पर भाई चढ़वाय ॥१२६

गर कोई गोरा जाय कैद में वहाँ पर रहता मौज उड़ाय ।
एक मामूली गोरे के मुकाबिल शाह जवाहर गान्धी नाय ॥१२७॥
गर एक गोरा मरे काल से हज़ारों फाँसी दे चढ़ाय ।
गर काले सौ मरें गोरा से तो भी उनको परवा नाय ॥ १२८ ॥

गोरे को मामूली बात पर नौकरी देते एक हज़ार ।
उसी जगह पर काला आ जाय उसको मिलते सौ और चार ॥१२९

बहुत दिनों से इन गोरों ने रक्खा था हम को बहकाय ।
दौलत सारी चुरा हमारी मुल्क अपने को दी भिजवाय ॥१३०॥

निर्धन निर्बल किया सभी को बढ़ा दिया बेहद लगान ।
जो नहीं दिया जाये हम से कुड़क करालें सब सामान॥१३१॥

कोठी बङ्गलों में रहते हैं और मोटर पर फिरैं सवार ।
बढ़िया २ होटल में जा खाना खाते दश दश बार ॥१३२॥
हुक्म चलाते शान बढ़ाते गाली देते बेशुम्मार ।
पी पी प्याले हो मतवाले हमको करते यूं लाचार ॥१३३॥
कुछ भारती करैं दलाली सुनलो भाई कान लगाय ।
लूट २ कर वोही हमको उनके घर में दें पहुँचाय ॥१३४॥
झूट कूट जो बच जाती है उनके हिस्से पड़ती आय ।
इसलिये ये मिलकर इनसे हम सब के रहे शीश कटाय ॥१३५॥
कोई बनता राय बहादुर कोई खाँ बहादुर सरदार ।
कोई जज कोई डिप्टी बनता धोके के ये बनते यार ॥१३६॥
आँख खोल लो अब तुम इनसे अपना समझो इनको नाय ।
बात करो ना जो तुम इनसे लोगे अपना काम बनाय ॥१३७॥
व्योपारी सब लूटे इनने सबका लिया माल छिनाय ।
जिस चीज को चाहे खरीदना उसको फौरन दें घटाय ॥१३८॥
रुपया वसूल न हो बनियाँ का जालसाज़ी दी सिखलाय ।
घर पाता रह जाय अपना धरती तक को दें बिकवाय ॥१३९॥
जबरदस्ती इनकमटैक्स उगाते चाहे आमदनी पैसा नाय ।
जो रुपया वसूल कर तंगीसे उसको खिताब तुरंत मिलजाय ॥१४०॥
गर अपना काम पड़े कोई आकर बातों में लेते फुसलाय ।
अपनी कौड़ी खर्च करैं ना फोकट में लें काम बनाय ॥१४१॥

गजल नं० ४

ये ना समझो चरखा मेरा कहन्दा घूं घूं घूं ।
ये तो याद करेगा हेगा गान्धी तूं तूं तूं ॥
एक दिन सुपना मैनू आया ।
सुपने दे विच यह फरमाया ॥
मोमिन विच चरखे दे तार में अल्ला हूँ हूँ हूँ ॥१॥
जेकर हिन्दी जरा दिल खोले ।
सुथर रोज कते तिन तोले ॥
फिर तो विच विलायत बोले कुक्कड़ कूं कूं कूं ॥२॥
गांधी चरखा काते दसिया ।
उत्थे खासा मलमल नसिया ॥
यूरुप वाले के ना देना सर विच जूं जूं जूं ॥३॥

गजल नं० ५

जमाना एक वह होगा कि हिन्दोस्तान चमन होगा ।
स्वदेशी ही यह तन होगा स्वदेशी ही कफ़न होगा ॥
रगेगी खून से सारी हमारे तन की यह चादर ।
मुकाबिल तोप तोगों के यह खाली ही बदन होगा ॥
गिरेंगी लाश पर लाशें हमारी मुल्क की खातिर ।
जुबा पर हो लिखा कल्मा ये लाशा जब दफ़्न होगा ॥
मिले जन्नत यहाँ पर भी मिले जन्नत वहाँ पर भी ।
बिना इतना किये बिन यह हमारा ना वतन होगा ॥